विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:- ७/०९/२०२०(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ: सप्तम: पाठनाम सौहार्दं प्रकृते: शोभा

नाट्यांश:

प्रकृतिमाता - अहम् प्रकृति: युष्माकम् सर्वेषाम् जननी ।यूयं सर्वे एव मे प्रिया:।

सर्वेषामेव मत्कृते महत्त्वं विद्यते यथासमयम् न तावत् कलहेन समयम् वृथा

यापयन्तु अपितु मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं च रसमयं कुरध्वम् ।

तद्यथा कथितम् -

प्रजासुखे सुखं राज्ञ: ,प्रजानां च हिते हितम् ।

नात्मप्रियं हितं राज्ञ:,प्रजानां तु प्रियं हितम् ।।

शब्दार्था:-

जननी – माता , सर्वेषामेव – सबों का ही , मत्कृते – मेर लिए ,

वृथा – बेकार , यापयनतु – बिताएं , कुरुध्वम् -करना चाहिए

मोदध्वम् – प्रसन्न होवें (प्रसन्न होना चाहिए)

अर्थ –

प्रकृति माता -मैं प्रकृति तुम सबकी मा हूं। तुम सभी मेरे प्रिय हो ।सभी

उचित समय पर मेरे लिए महत्त्व है,तो लड़ाई से समय को बेकाल न

बिताओ ,बल्कि मिलकर ही प्रसन्न रहो और जीवन को रसयुक्त बनाओ।

जैसा कि कहा गया है ।

प्रजा के सुख में राजा का सुख होता है प्रजा के हित में राजा का हित होता है।

राजा का अपना हित प्रिय नहीं होता है।उसे त़ो प्रजाओं का ही प्रिय होता है।